शोध प्रबन्ध का अध्यायशः सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध प्रस्तावना सहित नौ अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय विभिन्न खण्डों में विभक्त है। प्रस्तावना में शोध प्रबन्ध की प्रेरणा,महत्त्व एवं आभार प्रदर्शन प्रस्तुत किया गया है।

❖ **प्रथम अध्याय में महाकवि भास, हर्षदेव और अनंगहर्ष का परिचय एवं स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज रूपकों का परिचय निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत दिया गया है।**

क – रूपकों के नायक वत्सराज उदयन के व्यक्तित्व, जीवन–परिचय एवं जीवन शैली में प्रकाश डाला गया है।

ख – महाकवि भास, कविवर हर्षदेव और श्री अनंगहर्ष का जीवन परिचय, जन्म स्थान, स्थितिकाल और कृतियों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

ग – स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका एवं तापसवत्सराज आदि रूपकों का परिचय दिया गया है।

❖ **द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत रूपकों का लक्षण ,स्वरूप और भेदों का विस्तार से वर्णन किया गया है।**

क– रूपक तथा उपरूपकों की परिभाषा में प्रकाश डाला गया है।

ख – रूपक तथा उपरूपकों के लक्षणों का वर्णन किया गया है।

ग – रूपक तथा उपरूपकों के भेदों पर प्रकाश डाला गया है।

❖ **तृतीय अध्याय के अन्तर्गत वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों की कथावस्तु का वर्णन किया गया है।**

क – स्वप्नवासवदत्तम् की कथावस्तु का अंकानुसार विस्तृत वर्णन किया है, और स्वप्नवासवदत्तम् के कथा–स्रोत पर प्रकाश डालते हुए मूलकथा में किये गये

परिवर्तन एवं परिबर्धन पर प्रकाश डाला गया है। नाटक के नामकरण के मूल बिन्दु पर प्रकाश डाला गया है।

ख – प्रतिज्ञायौगन्धरायण की कथावस्तु का अंकानुसार विस्तृत वर्णन किया है। रूपक के कथा स्रोत पर प्रकाश डालते हुए मूल कथा में आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करके नयी कथा का स्वरूप दिया गया है। नाटक के नाम प्रतिज्ञायौगन्धरायण के मूल बिन्दु और उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया है।

ग – रत्नावली नाटिका की कथावस्तु का अंकानुसार विस्तृत वर्णन किया है। नाटिका के कथा स्रोत पर प्रकाश डालते हुए मूल कथा में किये गये परिवर्तन एवं परिमार्जन पर प्रकाश डाला गया है। नाटिका के नाम की सार्थकता एवं नामकरण पर प्रकाश डाला गया है।

घ – प्रियदर्शिका की कथावस्तु का अंकानुसार विस्तृत वर्णन किया है। नाटिका के कथा स्रोतों पर प्रकाश डालते हुए मूल कथा में किये आवश्यकीय परिवर्तन एवं परिमार्जन का वर्णन किया गया है। नाटिका के नामकरण एवं नामकरण की सार्थकता पर विवेचन किया गया है।

ङ –तापसवत्सराज की कथावस्तु का अंकानुसार विस्तृत वर्णन किया है। तापसवत्सराज के कथा स्रोतों पर प्रकाश डालते हुए मूल कथा में किये गये परिवर्तन एवं परिवर्धन का वर्णन किया गया है। रूपक के नामकरण की सार्थकता एवं नामकरण पर प्रकाश डाला गया है।

❖ **चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों की पात्र–योजना एवं चरित्र–चित्रण पर प्रकाश डाला गया और रूपकों में पात्रों के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।**

क – रूपकों में पात्रों के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

ख – स्वप्नवासवदत्तम् के पात्रों को स्त्री–पुरूष पात्रों की श्रेणी में विभक्त करते हुए पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का क्रमशः वर्णन किया गया है।

ग – प्रतिज्ञायौगन्धरायण के पात्रों को स्त्री–पुरूष पात्र की श्रेणी में विभाजित करके पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का क्रमानुसार वर्णन किया गया है।

घ – रत्नावली नाटिका के पात्रों को स्त्री–पुरूष पात्र की श्रेणी में विभक्त करते हुए पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का क्रमशः वर्णन किया गया है।

ङ – प्रियदर्शिका नाटिका के पात्रों को स्त्री–पुरूष पात्र की श्रेणी में विभाजित करके पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का क्रमानुसार वर्णन किया गया है।

च – तापसवत्सराज के पात्रों को भी स्त्री–पुरूष पात्रों की श्रेणी में विभाजित किया गया है। पात्रों की प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं पर क्रमानुसार प्रकाश डाला गया है।

❖ **पञ्चम अध्याय में वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में भावपक्ष एवं रस योजना पर प्रकाश डाला गया है। इसमें भाव पक्ष एवं रस योजना का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।**

क – स्वप्नवासवदत्तम् एवं प्रतिज्ञायौगन्धरायण में भावपक्ष के भेदों के अन्तर्गत भाव, भावाभास, भावशान्ति, भावोदय, भावसन्धि, भावशबलता आदि भावो का उदाहरण सहित विवरण प्रस्तुत किया गया है। स्वप्नवासवदत्तम् एवं प्रतिज्ञा–यौगन्धरायण में प्रयुक्त प्रमुख रसों का लक्षण उदाहरण सहित प्रस्तुत किया गया है।

ख – रत्नावली एवं प्रियदर्शिका में भावपक्ष के भेदों के अन्तर्गत भाव, भावाभास, भावशान्ति, भावोदय आदि भावों के उदाहरणों पर प्रकाश डाला गया है और नाटिका में आयें प्रमुख रसों के उदाहरण पर भी प्रकाश डाला गया है।

ग – तापसवत्सराज में भावपक्ष के भेदों के अन्तर्गत भाव, भावाभास, भावशान्ति आदि भावों का उदाहरण सहित वर्णन प्रस्तुत किया है। तापसवत्सराज में प्रयुक्त प्रमुख रसों का लक्षण उदाहरण सहित प्रस्तुत किया गया है।

❖ **षष्ठ अध्याय के अन्तर्गत वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों के कलापक्ष पर प्रकाश डाला गया है।**

क – स्वप्नवासवदत्तम् प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज में प्रयुक्त अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, परिकर स्वभावोक्ति, दृष्टान्त जैसे सुन्दर अलंकार का उदाहरण सहित विवरण प्रस्तुत किया गया है।

ख – स्वप्नवासवदत्तम् प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्स राज में प्रयुक्त अनुष्टुप, आर्या, मन्दाक्रान्ता, बसन्तलतिका, वंशस्थ, शार्दुल विक्रीडितम्, जैसे उत्कृष्ट छन्दों को उदाहरण सहित विवरण प्रस्तुत किया गया है।

ग – स्वप्नवासवदत्तम् प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज में प्रयुक्त छोटे–बड़े सरल एवं सरस और हास्यास्पद संवादों का सुन्दरता से वर्णन किया गया है।

घ– स्वप्नवासवदत्तम् प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज में प्रयुक्त भाषाओं संस्कृत, पालि एवं प्रमुख सूक्तियों का उदाहरण सहित वर्णन किया है।

ङ – स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्स– राज की शैली में ओज, माधुर्य आदि गुणों और वैदर्भी, पाञ्चाली आदि रीतियों का उदाहरण सहित वर्णन किया गया है।

च – स्वप्नवासवदत्तम् प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज के वाग्वैदग्ध्य का उदाहरण सहित प्रस्तुतीकरण किया है।

❖ **सप्तम अध्याय मे वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों के वर्णन कौशल पर प्रकाश डाला गया है। वर्णन को प्राकृतिक और अप्राकृतिक, विविध आदि तीन प्रकारों में विभाजित कर उनका संक्षिप्त परिचय देते हुए वर्णनों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।**

क – स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज के प्राकृतिक वर्णन के अन्तर्गत सूर्य–चन्द्रादि, सरोवर, रात्रि–दिन, पुष्प, वन–उपवन, पशु–पक्षी, नदी, तपोवन, वृक्ष, अग्नि, बसन्त, ग्रीष्म ऋतु आदि का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

ख – स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज में वस्तुवर्णन के अन्तर्गत नगर, वीणा बजाने, हरण, स्त्री विलाप, बसन्त महोत्सव, ऐन्द्रजालिक, आन्तरिक मनोभाव, चिता आदि का वर्णन किया गया है।

ग – स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज में विविध वर्णन के अन्तर्गत चित्रफलक दर्शन, शिवचित्र, युद्ध, कामदेव पजा, गान्धर्व विवाह, विदूषक का दिग्–भ्रम आदि का वर्णन किया गया है।

❖ **अष्टम अध्याय के अन्तर्गत वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म, दर्शन पर प्रकाश डाला गया है।**

क – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों के तत्कालीन समाज या सामाजिक जीवन, राजसी जीवन, रहन–सहन, सामान्य जनता की जीवन शैली पर प्रकाश डाला गया है।

ख – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों की संस्कृति, परम्पराओं, रीति–रिवाजों, वर्ण–व्यवस्था, उत्सवों, बोली–भाषा, मनोरंजन के साधनों आदि पर प्रकाश डाला गया है।

ग – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में वर्णित तत्कालीन अर्थव्यवस्था, व्यापार, वस्तुओं के लेन–देन आदि पर प्रकाश डाला गया है।

घ – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में वर्णित तत्कालीन भारतीय राजनीति, कूटनीति और राजव्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है।

ङ – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में वर्णित धर्म, परम्पराओं, धार्मिक मान्यताओं, विधि–विधानों, धार्मिक अनुष्ठानों और पूजा–पाठ पर प्रकाश डाला गया है।

च – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में वर्णित भारतीय आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन पर सूक्ष्म प्रकाश डाला गया है।

❖ **नवम अध्याय के अन्तर्गत उपसंहार प्रस्तुत किया गया है।**

क – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज का संस्कृत– साहित्य में स्थान निर्धारित किया गया है।

ख – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों के रूपककारों महाकवि भास, कवि हर्षदेव एवं कविवर अनंगहर्ष का संस्कृत साहित्य में स्थान निर्धारित किया गया है।

❖ **परिशिष्ट भाग को दो भागों में विभक्त किया गया है।**

क – प्रथम भाग के अन्तर्गत वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज में उपलब्ध सूक्तियों का अंकानुसार क्रमशः अर्थ सहित वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

ख – द्वितीय भाग के अन्तर्गत प्रस्तुत शोध प्रबन्ध हेतु जिन पुस्तकों, सन्दर्भ पुस्तकों एवं ग्रन्थों की सहायता ली गयी है। उन पुस्तकों एवं ग्रन्थों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।